RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

भक्तिकालीन साहित्य में कबीरदास का योगदान

Sunita

M.A Hindi (UGC NET) VPO - Ismaila (9B), Rohtak

भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का स्वर्णिम काल कहा जाता है। कविवर रहीम, तुलसी, सूर, जायसी, मीरा, रसखान आदि इसी युग की देन हैं जिन्होंने धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत कविताओं छंदों आदि के माध्यम से समाज के सम्मुख वैचारिक क्रांति को जन्म दिया।

इन कवियों ने भक्ति भाव के साथ ही साथ लोगों में नवीन आत्मचेतना का संचार भी किया तथा अपने उन्नत काव्य के माध्यम से समाज को एक नई दिशा दी ।भक्तिकालीन काव्यधारा को प्रमुख रूप से दो शाखाओं में विभाजित किया गया है – (1) निर्गुण भक्ति शाखा तथा)2 सगुण भक्ति शाखा। निर्गुण मार्गी शाखा के प्रमुख (कवि कबीर, रैदास आदि थे।

इनमें कबीरदास जी सर्वाधिक प्रचलित हुए। वे इसी युग के श्रेष्ठ संत रामानंद के शिष्य थे जिन्होंने तत्कालीन समय में व्याप्त जात भाव को दूर कर- पाँत के भेद- समाज में मानवतावाद की स्थापना का प्रयास किया। कबीरदास जी ने उन्हीं के मार्ग का अनुसरण किया तथा अपनी काव्य रचना में निर्गुण मत का प्रचारप्रसार किया।-

भक्ति युग की सगुण मार्गी शाखा को पुन राममार्गी धारा- दो प्रमुख धाराओं : तथा कृष्णमार्गी धारा के रूप में विभाजित किया जा सकता है। राममार्गी धारा के प्रमुख कवि तुलसीदास जी हुए हैं जिन्होंने भगवान राम की उपासना से संबंधित श्रेष्ठ काव्यों की रचना कर ख्याति प्राप्ति की।[i]

वहीं दूसरी ओर कृष्णमार्गी धारा के प्रमुख कवि सूरदास जी हुए हैं। सूरदास जी ने कृष्ण भक्ति का मार्ग अपनाते हुए कृष्ण लीला का जो सजीव चित्रण संसार के सम्मुख प्रस्तुत, किया वह अतुलनीय है।

इसके अतिरिक्त निर्गुण शाखा के मलिक मुहम्मद 'जायसी' का नाम भी प्रमुख है जिन्होंने प्रेम के मार्ग को प्रधानता दी और बताया कि ईश्वर प्राप्ति का आधार प्रेममार्ग ही है।-

कबीर के जन्म और मृत्यु को लेकर विद्वानों में मतभेद

कबीर पंथ में कबीर का आविर्भाव काल) में ज्येष्ठ पूर्णिमा .ई1398सोमवार(को बताया गया है। गणना से ये (बुधवार) माघ सुदी एकादशी .ई1518 को और मृत्यु तिथियां शुद्ध निकलती हैं। इसलिए विद्वानों ने उक्त संवत् को स्वीकार किया। ऐतिहासिक तथ्य भी मेल खाते हैं। कबीर ने अपने पद में सिकंदर लोदी द्वारा उनको जंजीर में ब , हाथी से कुचलनेाांध गंगा में डुबाने का उल्लेख किया है। चूंकि सिकंदर लोदी का समय सं .1545 से सं .1574 है। सं .1553 में लोदी का काशी आना भी सत्य है। इस तरह कबीर की मृत्यु सं .1575 मानना ठीक है।[ii] कबीर के गुरु रामानंद हुए हैं।

कबीर की भाषा को लेकर विद्वानों के मत

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कबीर बीजक की साखियों को भाषा को सुधक्कड़ी अर्थात् राजस्थानी पंजाबी मिली खड़ी बोली कहा है तथा रमैनियों एवं , पदों की भाषा में ब्रजभाषा एवं पूरबी बोली का भी उपयोग माना है।

डॉ रामकुमार वर्मा ने कहा है कि कबीर की कविता पूर्वी हिंदी का रूप .लिए हुए है। ब्रजभाषाव पंजाबी भाषा का प्रभाव उन पर पड़ा है। ,राजस्थानी ,खड़ी बोली ,

डॉकबीर अवधी भाषा के प्रथम संत कवि थे। -बाबूराम सक्सेना के अनुसार .
डॉकबीर की भाषा ब्रजभाषा ही थी। -सुनीति कुमार चटर्जी के अनुसार .

डॉ उदयनारायण तिवारी कबीर की भाषा को अधि .कांशतः बनारस की बोली बताते हैं।

परशुराम चतुर्वेदी अवधी खड़ी बोली चारों का प्रयोग ,भोजपुरी ,ब्रजभाषा , कहीं राजस्थानी व पंजाबी प्रयोग भी वे दिखलाते हैं।-कबीर में देखते हैं। कहीं

डॉ ,ब्रज ,भोजपुरी , त्रिलोकीनारायण दीक्षित ने कबीर की भाषा को अवधी . ,खड़ी बोलीराजस्थानी और पंजाबी का समन्वित रूप कहा है।

डॉ कबीर की भाषा संतभाषा है। संतों का संबंध - बच्चन सिंह के अनुसार . ,यात्राएं करते थे ,उनके साथ रहते थे , सीधे जनता से था। वे निम्न वर्ग में उत्पन्न हुए थे उपदेश देते थे। अतः बोलचाल की भाषा का व्यवहार करते थे। इससेखड़ी बोली का गहरा पुट होता था। भोजपुरी ब्रजी और राजस्थानी का भी उस पर प्रभाव था। ,[iii] कुल मिलाकर कबीर की भाषा में स्वाभाविकता सरलता व स्पष्टता का दर्शन मिलता है। , प्रभाव की दृष्टि से ये , व्याकरण की दृष्टि से इनकी भाषा शुद्ध व परिष्कृत भले न हो वाणी के डिक्टेटर थे। इनका शब्द , भंडार अनंत था। कबीर की वाणी में राजस्थानी- खड़ी बोली व अवधी आदि चारों भाषाओं के व्याकरण रूप दिखाई पड़ते हैं। ,ब्रज ग्रंथ साहिब पर पंजाबी तथा बीजक पर , कबीर ग्रंथावली की भाषा राजस्थानी भोजपुरी का विशेष प्रभाव दिखाई देता है।

कबीरदास ने बोलचाल की भाषा का ही प्रयोग किया है। भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। जिस बात को उन्होंने जिस रूप में प्रकट करना चाहा है, उसे उसी रूप में कहलवा लिया–बन गया है तो सीधे–सीधे, नहीं दरेरा देकर। भाषा कुछ कबीर के सामने लाचार –सी नज़र आती है। उसमें मानो ऐसी

RRIJM 2015, All Rights Reserved

हिम्मत ही नहीं है कि इस लापरवा फक्कड़ कि किसी फ़रमाइश को नाहीं कर सके। और अकह कहानी को रूप देकर मनोग्राही बना देने की तो जैसी ताकत कबीर की भाषा में है वैसी बहुत ही कम लेखकों में पाई जाती है। असीम –अनंत ब्रह्मानन्द में आत्मा का साक्षीभूत होकर मिलना कुछ वाणी के अगोचर , पकड़ में न आ सकने वाली ही बात है। पर 'बेहद्दी मैदान में रहा कबीरा ' में न केवल उस गम्भीर निगूढ़ तत्त्व को मूर्तिमान कर दिया गया है , बल्कि अपनी फ़क्कड़ाना प्रकृति की मुहर भी मार दी गई है। वाणी के ऐसे बादशाह को साहित्य –रसिक काव्यानंद का आस्वादन कराने वाला समझें तो उन्हें दोष नहीं दिया जा सकता। फिर व्यंग्य करने में और चुटकी लेने में भी कबीर अपना प्रतिद्वन्द्वी नहीं जानते। पंडित और क़ाज़ी , अवधु और जोगिया , मुल्ला और मौलवी –सभी उनके व्यंग्य से तिलमिला जाते थे। अत्यन्त सीधी भाषा में वे ऐसी चोट करते हैं कि खानेवाला केवल धूल झाड़ के चल देने के सिवा और कोई रास्ता नहीं पाता।

इस प्रकार यद्यपि कबीर ने कहीं काव्य लिखने की प्रतिज्ञा नहीं की तथापि उनकी आध्यात्मिक रस की गगरी से छलके हुए रस से काव्य की कटोरी में भी कम रस इकट्ठा नहीं हुआ है। कबीर ने जिन तत्त्वों को अपनी रचना से ध्वनित करना चाहा है, उसके लिए कबीर की भाषा से ज़्यादा साफ़ और ज़ोरदार भाषा की सम्भावना भी नहीं है और ज़रूरत भी नहीं है। परन्तु कालक्रम से वह भाषा आज के शिक्षित व्यक्ति को दुरूह जान पड़ती है। कबीर ने शास्त्रीय भाषा का अध्ययन नहीं किया था , पर फिर भी उनकी भाषा में परम्परा से चली आई विशेषताएँ वर्तमान हैं। इसका ऐतिहासिक कारण है। इस ऐतिहासिक कारण को जाने बिना उस भाषा को ठीक –ठीक समझना सम्भव नहीं है। इस पुस्तक में उसी ऐतिहासिक परम्परा के अध्ययन का प्रयास है। यह प्रयास पूर्ण रूप से सफल ही हुआ होगा , ऐसा हम कोई दावा नहीं करते , परन्तु वह ग्रहणीय नहीं है, इस बात में लेखक को कोई सन्देह नहीं है।

कबीर की रचनाओं में अनेक भाषाओं के शब्द मिलते हैं यथा अरबी -, फ़ारसी, पंजाबी, बुन्देलखंडी, ब्रजभाषा, खड़ीबोली आदि के शब्द मिलते हैं इसलिए इनकी भाषा को 'पंचमेल खिचड़ी' या 'सधुक्कड़ी' भाषा कहा जाता है। प्रसंग क्रम से इसमें कबीरदास की भाषा और शैली समझाने के कार्य से कभी –कभी आगे बढ़ने का साहस किया गया है। जो वाणी के अगोचर हैं , उसे वाणी के द्वारा अभिव्यक्त करने की चेष्टा की गई है; जो मन और बुद्धि की पहुँच से परे हैं; उसे बुद्धि के बल पर समझने की कोशिश की गई है ; जो देश और काल की सीमा के परे हैं , उसे दो–चार–दस पृष्ठों में बाँध डालने की साहसिकता दिखाई गई है। कहते हैं , समस्त पुराण और महाभारतीय संहिता लिखने के बाद व्यासदेव ने अत्यन्त अनुताप के साथ कहा था कि 'हे अधिल विश्व के गुरुदेव, आपका कोई रूप नहीं है, फिर भी मैंने ध्यान के द्वारा इन ग्रन्थों में रूप की कल्पना की है ; आप अनिर्वचनीय हैं , व्याख्या करके आपके स्वरूप को समझा सकना सम्भव नहीं है , फिर भी मैंने स्तुति के द्वारा व्याख्या करने की कोशिश की है। वाणी के द्वारा प्रकाश करने का प्रयास किया है। तुम समस्त –भुवन–व्याप्त हो , इस ब्रह्मांण्ड के प्रत्येक अणु –परमाणु में तुम भिने हुए हो , तथापि तीर्थ–यात्रादि विधान से उस व्यापित्व को खंडित किया है। भला जो सर्वत्र परिव्याप्त है , उसके लिए तीर्थ विशेष में जाने की क्या व्यवस्था ? सो हे जगदीश , मेरी बुद्धिगत विकलता के ये तीन अपराध–अरूप की रूपकल्पना , अनिर्वचनीय का स्तुतिनिर्वचन , व्यापी का स्थान –विशेष में निर्देश —तुम क्षमा करो। ' क्या व्यास जी के महान् आदर्श का पदानुसरण करके इस लेखक को भी यही कहने की ज़रूरत है?—

रूपं रूपविवर्जितस्य भवतो ध्यानेन यत्कल्पितम्,
स्तुत्या निर्वचनीयताऽखिलगुरोदूरी कृतायन्मया।
व्यापित्वं च निराकृतं भगवतो यत्तीर्थयात्रादिना,
क्षन्तव्यं जगदशी, तद् विकलता–दोषत्रयं मत्कृतम्।।[iv]

डॉ श्यामसुन्दर दास का मत है .'कबीर की भाषा का निर्णय करना टेढ़ी खीर है क्योंकि वह खिचड़ी है। उनके अनुसार कबीर की रचनाओं में कई भाषाओं के शब्द मिलते हैं। प रामचन्द्र शुकल का विचार था कि ."इसकी भाषा सुधक्कड़ी (साखी की) अर्थात राजस्थानी पंजाबी मिली खड़ी बोली है, पर 'रमैनी और 'सबद में वे पद हैं जिनमें काव्य की ब्रजभाषा और कहीं कहीं पूरबी बोली क-ा भी व्यवहार है। पं . हजारीप्रसाद द्विवेदी ने कबीर की भाषाके विषय में लिखा है -"भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। जिस बात को उन्होंने जिस रूप में प्रकट करना चाहा है उसे उसी रूप में भाषा से कहलवा दिया - बन गया है तो सीधे-सीधे, नहीं तो दरेरा देकर। भाषा कुछ कबीर के सामने लाचार सी नजर आती है। उसमें-मानो ऐसी हिम्मत ही नहीं है कि इस लापरवाह फक्कड़ की किसी फरमाइश को नहीं कर सके और अकह कहानी को रूप देकर मनोग्राही बना देने की तो जैसी ताकत कबीर की भाषा में है वैसी बहुत कम लेखकों में पाई जाती है।

द्विवेदी जी ने कबीर को व्यंग्यकार भी माना है "फिर व्यंग्य करने में और चुटकी लेने में भी कबीर अपना प्रतिद्वन्द्वी नहीं जानते। पंडित और काजी , अवधू और जोगिया, मुल्ला और मौलवीसभी उन-के व्यंग्य से तिलमिला जाते हैं।[v]

निस्सन्देह कबीर की भाषा में अनेक भाषाओं वे तत्त्व मिश्रित है। कबीर की + वैज्ञानिक अ- भाषा का भाषाध्ययन करने वाले प्राय . सभी शोधकत्ताओं ने डा : श्यामसुन्दर दासके निष्कर्ष को ही प्रकट किया है।

पं रामचन्द्र शुक्ल ने कबीर की सखियों की भाषा को .'सधुक्कड़ी कहा है। इस 'सधुक्कड़ी का आशय क्या है ? 'सधुक्कड़ी की व्याख्या करते हुए उन्होंने यह बताया है कि 'राजस्थानी पंजाबी मिली खड़ी बोली है।-'कबीर ग्रंथावली की भाषा पर कार्य करने वाले डा बिन्दुमाधव मिश्र ने इस सधुक्कड़ी की विशेषताओं पर विचार . करते हुए लक्षित किया है कि"सधुक्कड़ी में राजस्थानी , खड़ी बोजी और पंजाबी वे सभी तत्त्व विशेष प्रखर माने गये हैं। इन तीनों में सम्मलित प्रभाव से द्वित्व व्यंजन - ध्वनियों के संरक्षण, न से ण की ओर झुकाव , आकारान्त और ओकारान्त प्रातिपदिक तथा क्रियाओं में निष्ठारूप , सविभकितक पद प्रयोग की न्यूनता और परस-र्गों का बाहुल्य, सर्वनामों में 'मैं, 'उस, 'जिस, 'तिस, 'किस का प्रयोग आदि वु छ+ त किया जा सकता है। साथ ही इसमें अपभ्रंश+विशिष्टताओं की ओर संवेमें अवशेष भी मिल जाते हैं जिनमें शतृ प्रत्ययान्त 'हसंत, 'चलंत, रूप और चिहन-आह विभकित-हैं। कबीर यदि काशी में बैठकर पंजाबी, राजस्थानी, खड़ी बोली में तत्त्वों से मिश्रित काव्य भाषा में रचना कर रहे थे तो उसके परम्परागत कारण रहे होंगे।[vi]

कबीर पर नाथ सिद्धों का पर्याप्त प्रभाव था। नाथ पंथ का प्रचार पंजाब और-राजस्थान की ओर अधिक था। इसलिए उनकी भाषा पर पंजाब और राजस्थान की भाषा का भी प्रभाव उनकी बानियोंमें माध्यम से पड़ जाना स्वाभाविक है। कबीर ने जिस साधना और परम्परा का प्रभाव ग्रहण किया था उसको अभिव्यक्त करने वाली भाषापरम्परा का भी प्रभाव ग्रहण किया होगा-, इसमें सन्देह नहीं।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

संदर्भ सूची

[i] http://www.essaysinhindi.com/essays
[ii] डॉ .पृ ,हिंदी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास ,कुसुम राय .112वाराणसी। ,विश्वविद्यालय प्रकाशन ,
[iii] डॉ .पृ ,हिंदी साहित्य का दूसरा इतिहास ,बच्चन सिंह .91दिल्ली। ,राजपाल प्रकाशन ,
[iv] http://bharatdiscovery.org/india
[v] डॉदिल्ली विश्वविद्यालय। ,निबंध ,कबीर की भाषा ,विश्वनाथ त्रिपाठी .
[vi] रामस्वरूप चतुर्वेदी .पृ ,हिंदी साहित्य और संवेदना का विकास ,41दिल्ली। ,राजकमल प्रकाशन ,

RRIJM 2015, All Rights Reserved